A-0233

Total Pages : 3 **Roll No. .....**

MASL–607

M.A. SANSKRIT (MASL)

(गद्य एवं पद्य काव्य भाग-02)

4th Semester Examination, Session December 2024

Time : 2:00 Hrs. Max. Marks : 70

नोट :– यह प्रश्न-पत्र सत्तर (70) अंकों का है, जो दो (02) खण्डों 'क' तथा 'ख' में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। ***परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर-पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।***

खण्ड–क

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 2×19=38

नोट :– खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **दो** (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. नैषधीयचरित महाकाव्य के अनुसार राजा नल का वर्णन कीजिए।

2. बुद्धचरितमहाकाव्य के किसी एक पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।

3. निम्नलिखित में से किसी **एक** श्लोक सप्रसङ्ग की व्याख्या कीजिए–

देवैरभिप्रार्थ्यमनल्पभोगंसार्धं तयासौ बुभुजे नृपालः।

सा चाथ विद्येव समाधियुक्ता गर्भं दधे लोकहिताय साध्वी॥

अथवा

अमानुषीं तस्य निशम्य शक्तिं माता प्रकृत्या करुणाद्रचित्ता।

प्रीता च भीता च बभूव देवी शीतोष्णमिश्रेव जलस्य धारा॥

4. निम्नलिखित में से किसी **एक** सप्रसंग की व्याख्या कीजिए–

अधीति बोधाचरणप्रचारणैर्दशाश्चतस्रः प्रणयन्नुपाधिभिः।

चतुर्दशत्वं कृतवान् कुतः स्वयं न वेद्मि विद्यासु चतुर्दशस्वयम्॥

अथवा

निवारितास्तेन महीतलेऽखिले निरीतिभावं गमितेऽतिवृष्टयः।

न तत्यजुर्नूनमनन्यसंश्रयाः प्रतीपभूपालमृगीदृशां दृशः॥

5. नैषधीयचरित महाकाव्य के प्रथमसर्ग का सारांश लिखिए।

खण्ड–ख

लघु उत्तरीय प्रश्न 4×8=32

नोट :– खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **चार** (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. नैषधं विद्वदौषधम् इस पर टिप्पणी कीजिए।

2. बुद्धचरित महाकाव्य का ऐतिहासिक विश्लेषण कीजिए।

3. नैषध प्रथमसर्ग में नल दम्यन्ती के प्रथम दर्शन का वर्णन कीजिए।

4. यस्य प्रसूतौ गिरिराजकीला वाताहता नौरिव भूश्चाल।

   सचन्दना चोत्पलद्मगर्भा पपात वृष्टिर्गगनादनभ्रात॥

   इस श्लोक की सप्रसङ्ग व्याख्या कीजिए।

5. पदैश्चतुर्भिः सुकृते स्थिरीकृते कृतेऽमुना के न तपः प्रपेदिरे।

   भुवं यदेकाङ्घ्रिकनिष्ठया स्पृशन् दधावधर्मोऽपि कृशस्तपस्विताम्॥

   इस श्लोक की सप्रसङ्ग व्याख्या कीजिए।

6. बुद्धचरित महाकाव्य का अलंकार की दृष्टि से विश्लेषण कीजिए।

7. नैषधीय चरित महाकाव्य के महत्व पर प्रकाश डालिए।

8. महाकवि श्रीहर्ष का जीवन परिचय लिखिए।

****